

30/3/20

पचासी पचास वसुलाय जगा के साथे काय वास्तुशास्त्र
 छातीर नही अन् इन्ने किन्हे एकदलीय वापडाही अन्त
 मलाभी गाली ही कहत जायत पर काय रिगडी उर्मी
 वा उर्मीक जे स्त्रीवा (विदागागा ही विस्त्र किन्तु जपडे
 तकि उवाउर शास्त्र पचासी विदा जाया पचासी हेत
 शुका (घोडा) नन्करे उ उरु हे व दाखिले इन्त (घो)

22

